मेहनतकशों का पैग़ाम
Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 R.N.I. No. 66400/97

असगर अली इंजीनियर : सहिष्णुता के राजदूत 3
'जनता के पास एक ही चारा है बगावत' 4
मज़दूरों से हुई बातचीत की एक रिपोर्ट 6
हरियाणा में कानून व्यवस्था का हाल लड़कियों का स्कूल जाना हुआ मुहाल 8

वर्ष 26 अंक 14 फरीदाबाद, शनिवार, 1-15 जून 2013 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

इस बार शिकार हुए राजनेता नक्सली हमले में

व्याकुल सत्तानशीन जनता उदासीन

दिल्ली (म.मो.) छत्तीसगढ में नक्सलियों के बड़े हमले का शिकार इस बार राजनेता हो गये। उनके साथ सुरक्षाकर्मी भी मारे गये। पहले के हमलों में सिर्फ सुरक्षाकर्मी ही मारे जाते थे और राजनेता बयानबाज़ी करके अपनी-अपनी सियासत चमकाते थे। इस बार राजनेता सकते में हैं और चोट खाये कांग्रेसियों ने तो राज्य की भाजपाई सरकार को बरर्खास्त करने की मांग कर डाली है।

क्योंकि 25 मई का नक्सली हमला कांग्रेसी काफ़िले पर हुआ था, लिहाजा केन्द्र में मनमोहन सिंह की कांग्रेसी सरकार अपने 'कार्यकर्ताओं' व नेताओं का मनोबल रखने के लिये वहां तुरंत और सी आर पी एफ भेजने की घोषणा कर चुकी है। पार्टी के चिर-युवराज राहुल गांधी अपने दरबारियों सहित रातों-रात रायपुर पहुंच गये। उधार के तेवरों व उधार की भाषा के सहारे कैमरों के सामने उन्होंने भी 'लड़ाई' में टिके रहने का फ़रमान जारी किया।

पर 29 मौतों और दर्जनों घायलों वाले इस कांड में राजनेता अपनी-अपनी चारदीवारी के पीछे से जैसा भी आक्रोश का माहौल बनाने में लगे हों, आम जनता पूरी तरह उदासीन नज़र आती है। यहां तक कि ऐसी टिप्पणियां भी आपसी बात-

चीत में सुनने को मिल रही है कि सारी नक्सली समस्या को पैदा करने वाले इन लालची राजनेताओं की कौम पर हमला ठीक ही हुआ है।

लोगों को अफ़सोस इस बात का जरूर है कि इन भ्रष्ट राजनेताओं की हिफाजत में लगे कुछ सुरक्षाकर्मियों को भी जान गंवानी पड़ी। लोगों में इसकी भी चिढ है कि मारे गये राजनेताओं को तो शहीद का दर्जा दिया जा रहा है और घायल राजनेताओं के लिये सर्व श्रेष्ठ डॉक्टरों की सेवायें ली जा रही हैं, पर सुरक्षाकर्मियों को उनके हाल पर ही छोड़ दिया जाता है। कुछ ऐसा ही जन-माहौल सन् 2001 के भारतीय संसद पर हुए आतंकी हमले के दौर में भी देखने को मिला था तब आतंकी गिरोह को सुरक्षाबलों ने संसद में घुसने से पहले ही मार गिराने में सफलता पाई थी। इस कांड में सात सुरक्षाकर्मी मारे गये थे, और तब से हर साल सांसदों द्वारा 13 दिसम्बर को प्रति वर्ष एक दिखावटी श्रद्धांजली सभा उनकी स्मृति में संसद परिसर में आयोजित की जाती है।

शेष पेज 2 पर

सुविधा केन्द्र बनाम पुलिस की दुकान

पुलिस की दुकान : कपूर साहब दे गए चावला साहब को

फ़रीदाबाद (म.मो.) आम जनता के लिये पुलिस और सुविधा का कोई मेल नहीं है। यह मेल तभी संभव हो सकता है जब सुविधा शुल्क का लेन-देन हो जाये। ज़िला पुलिस ने सेक्टर 12 स्थित लघु सचिवालय के प्रवेश द्वार पर 'पुलिस सुविधा केन्द्र' के नाम से एक कांउटर खोला है। सस्ते राशन की दुकान की तर्ज पर यहां नकल रपट व एफआईआर की प्रति सस्ते दामों पर ली जा सकती है। दस्तावेज़ आदि की गुमशुदगी रपट भी यहां सस्ते दामों में लिखी जाती है। दाम प्राप्ती की पक्की रसीद भी बाकायदा दी जाती है। सस्ते दाम और मंहगे दाम का चक्कर सुनने में बड़ा अजीब सा लगता है क्योंकि कानूनन पुलिस की तमाम सेवायें पूरी तरह से निशुल्क होती हैं। वहां सस्ते या मंहगे दामों का कोई वर्गीकरण नहीं किया गया है। लेकिन संतरी से लेकर मुख्यमंत्री तक भ्रष्टाचार में डूबी इस-व्यवस्था में न केवल पुलिस में बल्कि कहीं भी किसी भी सरकारी दफ़्तर में कोई काम निशुल्क नहीं होता। रिश्वत देकर तैनाती पाया प्रत्येक कर्मचारी आगन्तुक की जेब काटने को आतुर रहता है। पुलिस चौकी व थाने भी इसके अपवाद नहीं हैं। पुलिस महकमे से भ्रष्टाचार को समाप्त करके जनता को निशुल्क सेवायें देना तो सरकार से न हो सका, लेकिन इन सेवाओं के दाम जरूर तय कर दिये हैं। इन्हीं तयशुदा दामों पर उक्त सुविधा केन्द्र से नकल रपट व एफआईआर की प्रतियां खरीदी जा सकती हैं।

रिश्वत देकर तैनाती पाया प्रत्येक कर्मचारी आगन्तुक की जेब काटने को आतुर रहता है। पुलिस चौकी व थाने भी इसके अपवाद नहीं हैं। पुलिस महकमे से भ्रष्टाचार को समाप्त करके जनता को निशुल्क सेवायें देना तो सरकार से न हो सका, लेकिन इन सेवाओं के दाम जरूर तय कर दिये हैं।

शेष पेज 2 पर

ख़बर दार

आईपीएल के 'पवित्र' और 'पापी' एक जैसे

दिल्ली (म.मो.) बीच चौराहे पर भंडा फूटने के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष श्रीनिवासन और आइ पी एल के चेयरमैन राजीव शुक्ला बैठकों और बयानों के जरिये ऐसे दिखा रहे हैं जैसे हज़ारों करोड़ की सट्टेबाज़ी से उनका कोई लेना-देना नहीं। यही हाल क्रिकेट के कारोबार पर काबिज अन्य बड़ी हस्तियों जैसे शरद पवार, ललित मोदी, अरुण जेटली, जैसों का है। आई पी एल की मलाई के बड़े हिस्सेदार हैं भी इस तरह दिखा रहे हैं जैसे मामला बस चन्द खिलाड़ियों के बहक जाने का ही हो।

क्रिकेट में सामान्यत: और आई पी एल में विशेषकर भारी-भरकम सट्टेबाजी एक आम बात बन चुकी है। दिल्ली पुलिस ने कारोबार की व्यापकता ही उजागर की है वरना गली-गली में क्रिकेट सट्टेबाज़ी से सभी वाकिफ़ होते हैं। पर न बोर्डवाले बोलते हैं, न आई पी एल वाले, न खिलाड़ी, न मीडिया। सब को मलाई में हिस्सा जो मिल रहा है। नवजोत सिंह सिद्धू की टिप्पणी भी इसी भाव से की गयी थी पर उसका व्यापक अर्थ सही है। सिद्धू ने कहा कि जब तमाम घोटालों में लिप्त भारतीय संसद की गरिमा फ़िर भी बरकरार रह सकती है तो सट्टेबाज़ी के भंवर में फंसी आई पी एल को पाप-लीग कहने का क्या मतलब? इस तरह आई पी एल को चरित्र प्रमाणपत्र दे कर सिद्धू ने अनायास ही मुद्दे को बहुआयामी बना दिया है। पहला आयाम तो यह कि जब आई पी एल का सारा ढांचा ही खरीद-फ़रोख्त पर खड़ा है तो इसमें शामिल खिलाड़ियों को जहां से भी ज़्यादा पैसा मिलेगा वे वहां का मुंह करेंगे ही। खिलाड़ियों के बीच की आर्थिक असमानता भी सट्टबाजी के लिए एक उत्तप्रेरक की भूमिका अदा करती है। एक खिलाड़ी तो 2 लाख या 10 लाख में अनुबंधित है और कोई अन्य 10 या 20 करोड़ में।

शेष पेज 2 पर

असली जालसाजों को कब रगड़ा जायेगा?

दिल्ली पुलिस और मुंबई पुलिस की सारी शक्ति क्रिकेट की सट्टेबाज़ी पर लगी हुई है। मीडिया उनकी वाहवाही में लगा हुआ है और उनकी ओर से रोज़ वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नई जानकारियां दी जा रही है कि इस 'महान' अपराध-विरोधी अभियान में जांच कहां तक पहुंची।

वैसे तो सट्टेवाज़ी का अपराध मैजूदा कानून की नज़र में एक निहायत मामूली सा अपराध ही होता है, जिसकी जुआ अधिनियम के अन्तर्गत जुर्माने एवं साधारण सी सज़ा ही बनती है। प्राय: सट्टेबाज़ों को 1000-2000 रुपया जुर्माने लगा कर मामला समाप्त हो जाता है। पर क्योंकि क्रिकेट और आई पी एल में बेशुमार पैसा लगा हुआ है और क्योंकि बड़े लोग खेल-प्रेमी जनता को धोखाधड़ी का शिकार बना रहे हैं, जिसको देखो वही इस आड़ में अपना उल्लू सीधा कर रहा है।

मीडिया को टी आर पी बढ़ाने का सुनहरा अवसर मिल गया; दिल्ली पुलिस अपनी नाकारा छवि से ध्यान बटाने में इसका इस्तेमाल कर रही है; नेताओं, क्रिकेट-प्रशासकों एवं आइ पी एल के गुर्गों को एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का अवसर मिल गया है, लिहाज़ा सट्टेबाज़ी के इस प्रकरण को राष्ट्रीय-विमर्श के केन्द्र में रखना ही है।

शेष पेज 2 पर

क्रिकेट बोर्ड अध्यक्ष श्रीनिवासन क्रिक्रेट है करोबार

चेयरमैन राजीव शुक्ला कारोबार है सट्टा